College Name -S.T.College Of Education
Subject -Language Accross the Curriculum

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 (NCF 2005)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 (NCF 2005) शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बनाना है। यह रूपरेखा बच्चों के समग्र विकास पर केंद्रित है, उन्हें सक्रिय शिक्षार्थी और समाज के जिम्मेदार सदस्य के रूप में देखती है।

यह प्रस्तुति NCF 2005 के प्रमुख सिद्धांतों पर प्रकाश डालेगी, जो भारत में शिक्षा के भविष्य को आकार देते हैं। हम बाल-केंद्रित शिक्षा से लेकर मूल्य-आधारित शिक्षण और प्रौद्योगिकी के उपयोग तक विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

बाल-केंद्रित शिक्षा

बच्चे पर केंद्रित

शिक्षा प्रणाली का केंद्र बिंदु बच्चा होना चाहिए। बच्चों की जिज्ञासा, अनुभव, गति और शैली को ध्यान में रखते हुए शिक्षण किया जाए।

शिक्षक की भूमिका

शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शिका और सहायक की होनी चाहिए, न कि केवल निर्देश देने वाले की। शिक्षा को बच्चों के लिए अर्थपूर्ण, प्रासंगिक और जीवन से जुड़ा होना चाहिए।

भयमुक्त वातावरण

सीखने की प्रक्रिया में डर और दंड के स्थान पर विश्वास, प्रोत्साहन और सहयोग को प्राथमिकता दी जाए। यह बच्चों को स्वतंत्र रूप से सीखने के लिए प्रेरित करता है।

ज्ञान का निर्माण और समझ आधारित शिक्षा

NCF 2005 के अनुसार, बच्चे निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं, बल्कि सक्रिय ज्ञान निर्माता होते हैं। वे अपने अनुभव, सामाजिक बातचीत और पर्यावरण के साथ सहभागिता से ज्ञान प्राप्त करते हैं।

पाठ्यक्रम ऐसा हो जो सोच, विश्लेषण, तर्क और रचनात्मकता को बढ़ावा दे। प्रोजेक्ट आधारित, समस्या-समाधान, समूह चर्चा जैसी विधियों को अपनाया जाए। शिक्षक और छात्र के बीच द्विपक्षीय संवाद को महत्व दिया जाए।

समावेशी और समानता पर आधारित शिक्षा

समान अवसर

सभी वर्गों, लिंगों, भाषाओं और क्षमताओं के बच्चों के लिए समान अवसर प्रदान किए जाएं। शिक्षा में सामाजिक न्याय, समता और भागीदारी को बढ़ावा देना।

विशेष उपाय

विकलांग बच्चों, आदिवासी बच्चों और अन्य हाशिये पर स्थित समुदायों के लिए विशेष उपाय किए जाएं। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में स्थान देना।

सम्मानजनक वातावरण

भेदभाव रहित और सभी के लिए सम्मानजनक वातावरण सुनिश्चित करना, ताकि हर बच्चा सुरक्षित महसूस करे और सीख सके।

मूल्य आधारित शिक्षा

शिक्षा केवल जानकारी नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों को भी सिखाने का माध्यम है। नैतिकता, ईमानदारी, सहिष्णुता, सहयोग, दया और करुणा जैसे गुणों को शामिल किया जाए।

पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी, लैंगिक समानता, लोकतंत्र की समझ और सामाजिक सरोकार को बढ़ावा देना। स्कूल में अनुशासन, शिष्टाचार और जिम्मेदारी का वातावरण बनाया जाए।

भाषा और संवाद का महत्व

मातृभाषा में शकि्षा

मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शकि्षा बच्चों को बेहतर समझ में आती है, जससि उनकी सीखने की प्रकरि्या सुगम होती है।

त्र-भाषा सूत्र

त्र-भाषा सूत्र (हदिी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा) को लागू कयाि जाना चाहएि, जससि भाषाई ववििधिता को बढ़ावा मलि।

बहुभाषकिता

बहुभाषकिता को बढ़ावा देकर सामाजकि समरसता और राष्ट्रीय एकता को मजबूत कयाि जा सकता है, क्योंकि भाषाएं सोच और संस्कृति का जरयाि हैं।

परीक्षा और मूल्यांकन में सुधार

समझ आधारति मूल्यांकन

रटांत प्रणाली को हटाकर समझ आधारति मूल्यांकन अपनाना, जिससे बच्चों की वास्तवकि समझ का आकलन हो सके।

सतत और व्यापक मूल्यांकन (CCE)

सतत और व्यापक मूल्यांकन (CCE) के माध्यम से बच्चे की संपूर्ण प्रतभिा का आकलन करना, जिसमें शैक्षणकि और सह-शैक्षणकि दोनों पहलू शामलि हों।

वविधि माध्यम

मौखकि, लखिति, व्यवहारकि, समूह कार्य और प्रस्तुतजैसे वविधि माध्यमों से मूल्यांकन करना, ताक बिच्चों की क्षमताओं का सही आकलन हो सके।

आनंददायक और सहभागिता आधारित शिक्षा

शिक्षा का वातावरण ऐसा हो जिसमें बच्चे दबाव और भय से मुक्त होकर सीखें। शिक्षण को रोचक, रचनात्मक और बच्चों की भागीदारी वाला बनाया जाए।

खेल, चित्र, कहानी, अभिनय, प्रयोग और कला जैसी गतिविधियां शामिल की जाएं। सीखने को जीवन और परिवेश से जोड़कर प्रस्तुत किया जाए, जिससे यह अधिक प्रासंगिक लगे।

लैंगकि समानता और पर्यावरण शकि्षा

लैंगकि समानता

लड़के और लड़कियों को शकि्षा में समान अधकिार और अवसर मलिने चाहिए। पाठ्यपुस्तकों और शकि्षण सामग्री में लगिं आधारति पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए।

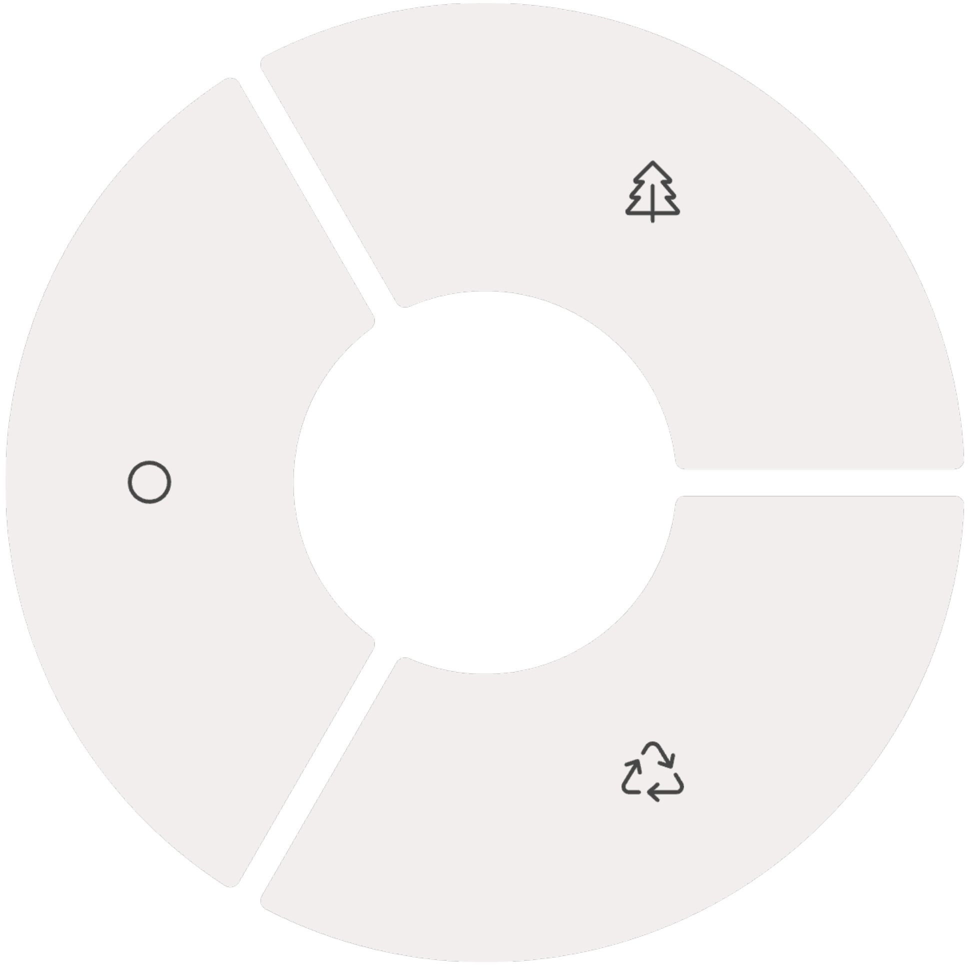

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण संरक्षण को शकि्षा का अभनि्न अंग बनाना। बच्चों में प्रकृत के प्रत संवेदनशीलता और संरक्षण की भावना जगाना।

स्थानीय परयिोजनाएं

स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं पर आधारति परयिोजनाओं को बढ़ावा देना। स्कूल स्तर पर स्वच्छता, वृक्षारोपण, जल संरक्षण, अपशषि्ट प्रबंधन जैसी गतविधियिां करवाई जाएं।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का उपयोग

तकनीक का उपयोग शिक्षण को बेहतर, सुलभ और समावेशी बनाने के लिए किया जाए। कंप्यूटर, स्मार्ट बोर्ड, मोबाइल ऐप, ऑडियो-विज़ुअल सामग्री का समावेश।

डिजिटल लर्निंग से शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए नए अवसर सृजित होते हैं। ICT का प्रयोग शैक्षिक सामग्री निर्माण, मूल्यांकन और संवाद के लिए किया जा सकता है। शिक्षकों को ICT में दक्षता विकसित करने हेतु प्रशिक्षण दिया जाए।

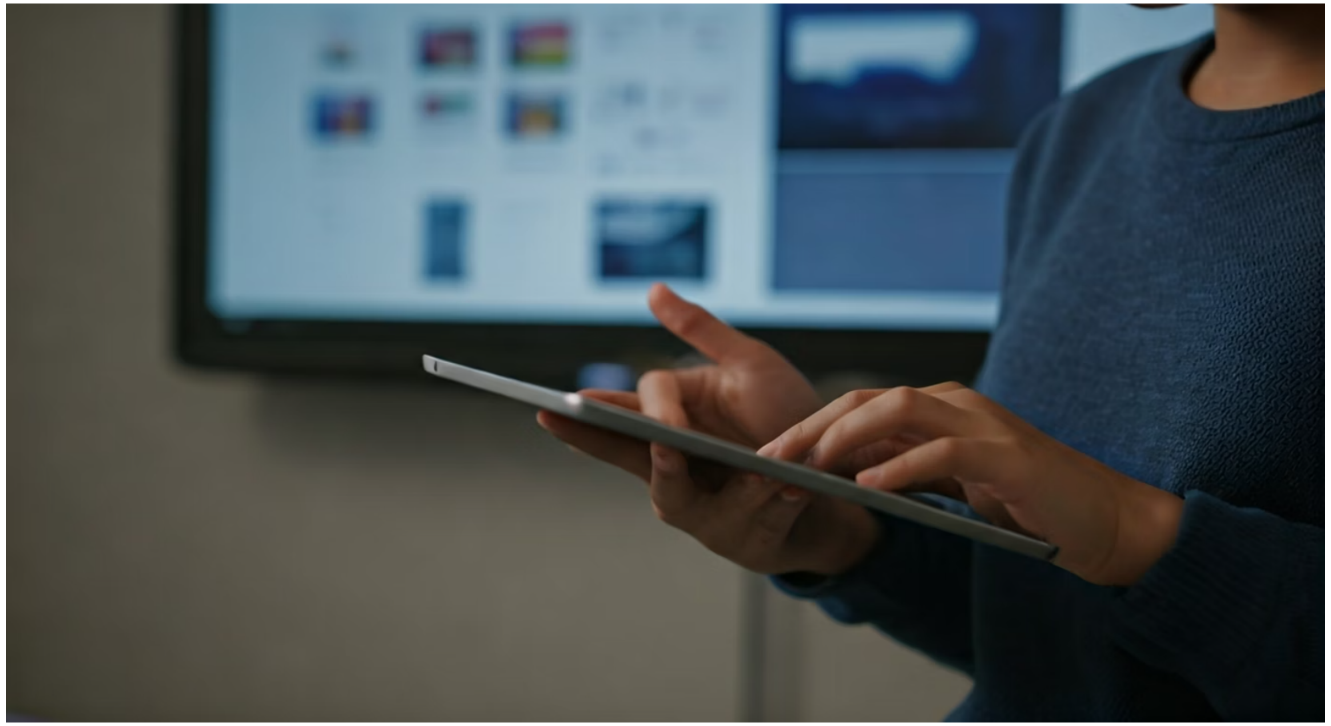

NCF 2005 शिक्षा को बाल-केंद्रित, समावेशी, मूल्य-आधारित और व्यावहारिक बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल है। यह न केवल शिक्षा की संरचना बल्कि उसकी आत्मा को भी नया दृष्टिकोण देता है। इसमें बच्चा केवल सीखने वाला नहीं, बल्कि समाज का सक्रिय सदस्य और परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में देखा गया है।

Thank You

College name-S.T. College of Education

Topic-NEP 2020

Subject-Language Across the Curriculum

Made with GAMMA

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक नया सवेरा

भारत की शिक्षा में एक ऐतिहासिक बदलाव का दस्तावेज़। इसे 29 जुलाई 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत किया गया था। यह पुरानी 1986 की शिक्षा नीति का स्थान लेती है।

NEP 2020 के प्रमुख स्तंभ

पहुंच

सभी के लिए शिक्षा की सुलभता।

समानता

बिना भेदभाव के समान अवसर।

गुणवत्ता

उच्च स्तरीय शिक्षण मानक।

सामर्थ्य

शिक्षा का वहनीय होना।

जवाबदेही

शैक्षिक प्रणाली की जिम्मेदारी।

जीडीपी का 6% शिक्षा पर खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है। यह बहु-विषयक शिक्षा और कौशल विकास पर जोर देता है।

Made with GAMMA

NEP 2020 की आवश्यकता और मूल दृष्टि

34 वर्षों बाद शिक्षा नीति में बदलाव।

ज्ञान-आधारित समाज की नींव रखने का लक्ष्य।

समावेशी, न्यायसंगत, और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना।

सकल नामांकन अनुपात (GER) को 2035 तक 50% बढ़ाना।

स्कूली शिक्षा में बड़े सुधार

- 10+2 संरचना को 5+3+3+4 प्रणाली में बदलना।
- फाउंडेशनल स्टेज (3-8 वर्ष) में आंगनवाड़ी/प्री-स्कूल शामिल।
- सीखने पर केंद्रित पाठ्यक्रम, रटने पर नहीं।
- कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा का परिचय।
- समग्र प्रगति कार्ड (360 डिग्री मूल्यांकन) लागू होगा।

Made with GAMMA

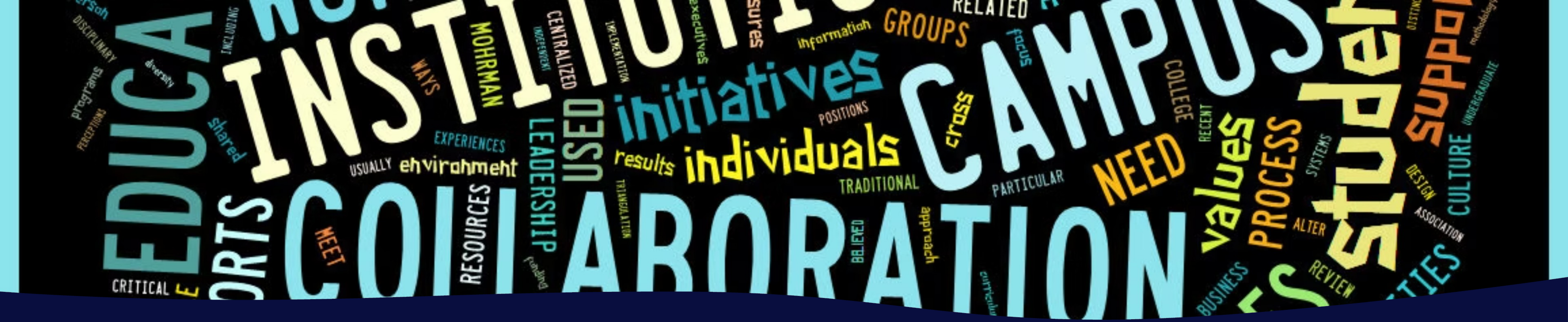

उच्च शिक्षा का परिवर्तन

NEP 2020 उच्च शिक्षा में कई महत्वपूर्ण बदलाव लाता है।

- एकल नियामक से बहु-विषयक संस्थानों की ओर बदलाव।
- एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ABC) की स्थापना की जाएगी।
- शोध और अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाएगा (NERF)।
- उच्च शिक्षा में GER को 2035 तक 50% तक पहुंचाना।

Made with GAMMA

शिक्षक शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण

शिक्षक शिक्षा

शिक्षकों के लिए नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCFTE 2021) लागू। 2030 तक न्यूनतम योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. होगी।

व्यावसायिक शिक्षा

इसे मुख्यधारा में शामिल किया जाएगा। छात्रों को स्थानीय कारीगरों के साथ सीखने का अवसर मिलेगा, जिससे व्यावहारिक कौशल विकसित होंगे।

भारतीय भाषाओं और संस्कृति का संवर्धन

- कक्षा 5 तक मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षा।
- त्रि-भाषा सूत्र का लचीला कार्यान्वयन।
- भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा।
- भाषाओं के लिए राष्ट्रीय संस्थान (NITL) की स्थापना की जाएगी।

Made with GAMMA

प्रौद्योगिकी और डिजिटल शिक्षा

NETF का निर्माण

राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF) का निर्माण।

ऑनलाइन शिक्षा

ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा।

ई-सामग्री

शैक्षिक ई-सामग्री का विकास और उपयोग।

समान पहुंच

समावेशी डिजिटल शिक्षा के लिए समान पहुंच।

कार्यान्वयन और वित्तपोषण

NEP 2020 के सफल कार्यान्वयन के लिए कई रणनीतियाँ अपनाई जाएंगी।

1
वित्तपोषण

शिक्षा पर जीडीपी का 6% खर्च करने की प्रतिबद्धता।

2
समन्वय

विभिन्न मंत्रालयों के बीच प्रभावी समन्वय।

3
रोलआउट

नीति का चरणबद्ध तरीके से रोलआउट।

4
भागीदारी

राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सक्रिय भागीदारी।

Made with GAMMA

NEP 2020: अपेक्षित प्रभाव और लाभ

- छात्रों में 21वीं सदी के कौशल का विकास।
- रोजगारपरक शिक्षा और नवाचार को बढ़ावा।
- भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना।
- समानता और समावेशन के माध्यम से सामाजिक न्याय।

Made with GAMMA

उद्दीपन परिवर्तन कौशल का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and definition of stimulus variation skill) -

छात्रों का ध्यान आकर्षित करने तथा पाठ में उनका ध्यान बनाए रखने के लिए शिक्षक अपने व्यवहारों में जान-बूझकर जो परिवर्तन करता है, उसे उद्दीपन परिवर्तन कौशल कहा जाता है।

शिक्षक शिक्षण को रोचक और प्रभावशाली बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रकार के उद्दीपनों का प्रयोग करता है,

To attract students' attention and to keep it focused on the lesson, the deliberate changes made by the teacher in his/her behaviour are known as Stimulus Variation Skill.

To make teaching interesting and effective, the teacher uses various types of stimuli, such as (**जैसे**)–

- सहायक सामग्री का उपयोग (Use of teaching aids)
- श्यामपट पर लेखन करना (Writing on the blackboard)
- छात्रों के पास जाकर प्रश्न पूछना (Moving closer to students and asking questions)
- चेहरे के हाव-भाव बदलकर समझाना (Using facial expressions while explaining)
- हाथों से संकेत करना (Using hand gestures)

एलेन एवं रयान (1969) के अनुसार–

"उद्दीपन परिवर्तन से तात्पर्य अध्यापन के दौरान शिक्षक द्वारा किए गए व्यवहारगत योजनाबद्ध परिवर्तनों से है, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों का ध्यान बनाए रखना और ऊब को कम करना होता है।"

According to **Allen & Ryan (1969)-**

"Stimulus variation refers to the deliberate changes in teacher behaviour made during teaching in order to maintain students' attention and reduce boredom."

उद्दीपन परिवर्तन कौशल की अवधारणा (Concept of stimulus variation skill)-

उद्दीपन परिवर्तन कौशल की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि एक ही प्रकार का शिक्षण व्यवहार विद्यार्थियों में नीरसता और ध्यान-भंग उत्पन्न करता है। जब शिक्षक योजनाबद्ध रूप से उद्दीपनों में परिवर्तन करता है, तो विद्यार्थी मानसिक रूप से सजग, प्रेरित और सक्रिय बने रहते हैं।

The concept of Stimulus Variation Skill is based on the idea that continuous repetition of the same teaching behaviour causes boredom and loss of attention among students. By introducing planned changes in stimuli, the

teacher keeps learners mentally alert, motivated, and actively involved in learning.

उद्दीपन परिवर्तन कौशल के घटक (Components of stimulus variations skill)-

1-अध्यापक की गति (Teacher's Movement)

2- अध्यापक की भाव-मुद्रा (Teacher's Gestures / Expressions)

- **(a)** मुख द्वारा (By Face)
- **(b)** नेत्र द्वारा (By Eyes)
- **(c)** सिर द्वारा (By Head)
- **(d)** हस्त संकेत (By Hand Gestures)

3- स्वर में आरोह-अवरोह (Variation in Voice Modulation)

4- भाव केंद्रीकरण (Focusing of Attention)

- **(a)** शाब्दिक भाव केंद्रीकरण (Verbal Focusing)
- **(b)** अशाब्दिक भाव केंद्रीकरण (Non-Verbal Focusing)
- **(c)** शाब्दिक एवं अशाब्दिक भाव केंद्रीकरण (Both)

5- विराम प्रयोग (Pausing)

6- शिक्षक - छात्र परस्पर क्रिया (Teacher-Student Interaction)

- **(a)** शिक्षक-कक्षा (Teacher-Class)
- **(b)** शिक्षक-छात्र (Teacher-Student)

(c) छात्र-छात्र अनुक्रिया (Student-Student Interaction)

7- श्रव्य-दृश्य क्रम परिवर्तन (Change in Audio-Visual Sequence)

1-अध्यापक की गति (Teacher's Movement) -

Teacher's movement means the teacher's physical movement in the classroom to maintain attention.

अध्यापक की गति का अर्थ है कक्षा में शिक्षक का स्थान परिवर्तन करना जिससे विद्यार्थियों का ध्यान बना रहे।

Example / उदाहरण:

Teacher moves towards back-bench students while teaching.

शिक्षक पिछली बेंच के छात्रों के पास जाकर पढ़ाता है।

2-अध्यापक की भाव-मुद्रा (Teacher's Gestures / Expressions) -

अध्यापक अपने भावों को विभिन्न अंगों द्वारा व्यक्त करता है।

(a) मुख द्वारा (By Face)-

Facial expressions show emotions like happiness, surprise.

चेहरे के भाव से भावना व्यक्त करना।

Example: Smiling to encourage students. छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए मुस्कुराना।

(b) नेत्र द्वारा (By Eyes)-

Eye contact keeps students alert.

नेत्र संपर्क से छात्र सजग रहते हैं।

Example: Looking at inattentive students. ध्यान न देने वाले छात्र को देखना।

(c) सिर द्वारा (By Head)-

Nodding head for approval or disapproval.

सिर हिलाकर सहमति या असहमति प्रकट करना।

Example: Nodding head for correct answer. सही उत्तर पर सिर हिलाना।

(d) हस्त संकेत (By Hand Gestures)-

Hand movements clarify concepts.

हाथों के संकेत से विषय स्पष्ट होता है।

Example: Showing size using hands. हाथों से आकार दिखाना।

3- स्वर में आरोह-अवरोह (Variation in Voice Modulation)-

Change in pitch, tone, loudness and speed of voice.

आवाज़ की ऊँच-नीच, गति एवं तीव्रता में परिवर्तन।

Example / उदाहरण:

Teacher raises voice to stress important points. महत्वपूर्ण बिंदु ऊँची आवाज़ में कहना।

4- भाव केंद्रीकरण (Focusing of Attention) -

(a) शाब्दिक भाव केंद्रीकरण (Verbal Focusing)-

Using words to focus attention.

शब्दों द्वारा ध्यान केंद्रित करना।

Example: "Listen carefully, this is important." "ध्यान से सुनिए, यह महत्वपूर्ण है।"

(b) अशाब्दिक भाव केंद्रीकरण (Non-Verbal Focusing)-

Using gestures, silence, eye contact. बिना शब्दों के संकेत द्वारा ध्यान आकर्षित करना।

Example: Raising hand silently. बिना बोले हाथ उठाना।

(c) शाब्दिक एवं अशाब्दिक भाव केंद्रीकरण (Both)-

Combination of verbal and non-verbal methods.

शब्द और संकेत दोनों का प्रयोग।

Example / उदाहरण:

Teacher says “Watch this” and points to chart.

शिक्षक कहता है “यह देखिए” और चार्ट की ओर संकेत करता है।

5- विराम प्रयोग (Pausing)-

Giving short pause during teaching to regain attention. पढ़ाते समय थोड़ी देर रुकना ताकि ध्यान पुनः केंद्रित हो।

Example / उदाहरण:

Pause after asking a question.

प्रश्न पूछने के बाद विराम देना।

6- शिक्षक - छात्र परस्पर क्रिया (Teacher-Student Interaction)-

(a) शिक्षक-कक्षा (Teacher-Class)-

Teacher addresses whole class.

शिक्षक पूरी कक्षा से बात करता है।

(b) शिक्षक-छात्र (Teacher-Student)-

Individual interaction.

शिक्षक और एक छात्र के बीच संवाद।

(c) छात्र-छात्र अनुक्रिया (Student-Student Interaction)-

Students interact among themselves. छात्र आपस में संवाद करते हैं।

Example / उदाहरण:

Group discussion. समूह चर्चा।

7- श्रव्य-दृश्य क्रम परिवर्तन (Change in Audio-Visual Sequence)-

Using different teaching aids like audio, visual and audio-visual materials. श्रव्य, दृश्य तथा श्रव्य-दृश्य साधनों में परिवर्तन।

Example / उदाहरण:

Lecture → Chart → Video → Questioning

व्याख्यान → चार्ट → वीडियो → प्रश्नोत्तर

BLACKBOARD WRITING SKILLS (ब्लैकबोर्ड लेखन कौशल)

- ## Meaning and definition of blackboard skills (ब्लैकबोर्ड कौशल का अर्थ एवं परिभाषा परिभाषा)

Blackboard writing skills mean the teacher's ability to write clearly, neatly, and systematically on the blackboard to help students understand the lesson better.

ब्लैकबोर्ड लेखन कौशल से तात्पर्य शिक्षक की उस क्षमता से है जिसके द्वारा वह स्पष्ट, साफ़ और क्रमबद्ध ढंग से ब्लैकबोर्ड पर लिखकर शिक्षण को प्रभावी बनाता है।

- ## Definition of blackboard writing skills (श्यामपट्ट लेखन कौशल की परिभाषा)

According to **B.K. Passi, "**Blackboard Writing Skill is the ability of a teacher to present subject matter on the blackboard in a clear, legible, systematic, and attractive manner to facilitate effective learning."

बी. के. पासी के अनुसार, "श्यामपट्ट लेखन कौशल शिक्षक की वह क्षमता है जिसके द्वारा वह विषयवस्तु को श्यामपट्ट पर स्पष्ट, पठनीय, क्रमबद्ध एवं आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करता है, जिससे शिक्षण-अधिगम प्रभावी बनता है।"

- ## Concept (अवधारणा)

Blackboard writing is a visual teaching aid. It supports oral teaching and helps learners remember, understand, and revise the lesson easily—especially in language learning.

ब्लैकबोर्ड लेखन एक दृश्य शिक्षण साधन है। यह मौखिक शिक्षण को सहारा देता है और भाषा सीखने में छात्रों को समझने, याद रखने और पुनरावृत्ति करने में सहायता करता है।

Components of Blackboard Writing Skills

(ब्लैकबोर्ड लेखन कौशल के घटक)

- ### Clarity of writing (लेखन की सुस्पष्टता)

Writing should be clear and readable.

लेखन साफ़ और पढ़ने योग्य होना चाहिए।

Example / उदाहरण:

छात्र का लेखन स्पष्ट है।

The student's handwriting is clear. ✔ The stoodent hadriting is claer ✘

- **Cleaning of the blackboard (श्यामपट्ट की स्वच्छता)**

The blackboard should be clean and well-maintained.

ब्लैकबोर्ड साफ़ और व्यवस्थित होना चाहिए।

- **Rationale for blackboard work (श्यामपट्ट कार्य का औचित्य/ उचितता)**

Use a blackboard as needed.

Write key points on the blackboard.

Avoid unnecessary handwriting.

आवश्यकतानुसार श्यामपट्ट का प्रयोग करे।
मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखे।
अनावश्यक लिखावट से बचे।

Writing on the blackboard helps students understand the lesson quickly. श्यामपट्ट पर लिखने से छात्र विषय जल्दी समझ पाते हैं।

Example / उदाहरण:

The teacher writes a math formula on the blackboard so that students can understand it easily.

शिक्षक गणित का सूत्र श्यामपट्ट पर लिखते हैं, जिससे छात्र आसानी से समझ सकें।

Area of rectangle = Length × breadth

आयत का क्षेत्रफल = लंबाई × चौड़ाई

- **Handwriting arrangement (लिखावट की व्यवस्था)**

Content should be written in a logical order.

विषय-वस्तु को क्रमबद्ध रूप से लिखा जाना चाहिए।

Example / उदाहरण:

Noun (संज्ञा)

Definition – Examples

- **Accuracy of handwriting(लिखावट की शुद्धता)**

Correct spelling and grammar must be used.

सही वर्तनी और व्याकरण का प्रयोग आवश्यक है।

Example / उदाहरण:

वह एक पुस्तक पढ़ रहा है

He is reading a book. ✔

He reading a book. ❌

- **Use of chalk of different colours (विविध रंगों के चॉक का प्रयोग)**

Different colours should be used for headings and key points.

शीर्षकों और मुख्य बिंदुओं के लिए रंगीन चॉक का प्रयोग करना चाहिए।

- **Visibility of handwriting (लिखावट की दृश्यता)**

Writing should be visible from the last bench.

लेखन अंतिम पंक्ति से भी दिखाई देना चाहिए।

- **Correlation with Teaching (शिक्षण से संबंध)**

Writing should match the teacher’s explanation.

लेखन शिक्षक के मौखिक विवरण से जुड़ा होना चाहिए।

Multilingual Classroom

(बहुभाषी कक्षा)

A multilingual classroom is a learning environment where students speak two or more different languages as their mother tongue or home language.

बहुभाषी कक्षा वह कक्षा होती है जहाँ विद्यार्थी दो या दो से अधिक भाषाओं में बोलने वाले होते हैं, जैसे - हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू, भोजपुरी, मैथिली आदि।

Characteristics / विशेषताएँ -

Students from different linguistic backgrounds

(विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि के विद्यार्थी)

Use of more than one language in classroom interaction

(कक्षा में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग)

Code-switching and code-mixing

(भाषाओं का अदल-बदल)

Rich language exposure

(समृद्ध भाषायी वातावरण)

Examples :

A classroom where one student speaks Hindi, another Urdu, another English, and some speak Bhojpuri or Maithili.

Teacher explains a concept in English, clarifies in Hindi, and allows discussion in home language.

Importance of Multilingual Classrooms (बहुभाषी कक्षाओं का महत्व)-

Respects students' linguistic identity

Enhances cognitive development

Improves communication skills

Promotes inclusion and equality

विद्यार्थियों की भाषाई पहचान को सम्मान

बौद्धिक विकास में सहायक

संचार कौशल का विकास

समावेशी शिक्षा को बढ़ावा

Multicultural Awareness

(बहुसांस्कृतिक जागरूकता) -

Multicultural awareness means understanding, respecting and valuing different cultures, traditions, beliefs and languages present in the classroom.

बहुसांस्कृतिक जागरूकता का अर्थ है कक्षा में मौजूद विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, विश्वासों और भाषाओं को समझना, स्वीकार करना और सम्मान देना।

Elements / घटक -

Culture (संस्कृति)

Language (भाषा)

Religion (धर्म)

Customs & traditions (रीति-रिवाज़)

Values (मूल्य)

Importance of Multicultural Awareness in Classroom (कक्षा में बहुसांस्कृतिक जागरूकता का महत्व) -

Reduces prejudice and bias

Builds mutual respect

Creates a positive learning environment

Encourages social harmony

पूर्वाग्रह और भेदभाव कम करता है

आपसी सम्मान विकसित करता है

सकारात्मक सीखने का वातावरण बनाता है

सामाजिक सद्भाव को बढ़ाता है

Example :

Celebrating festivals like Diwali, Eid, Christmas in school.

Allowing students to share stories from their own culture.

Relationship between Multilingual Classroom and Multicultural Awareness

(बहुभाषी कक्षा और बहुसांस्कृतिक जागरूकता का संबंध) -

Language and culture are closely related. A multilingual classroom naturally becomes multicultural.

भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध होता है। इसलिए बहुभाषी कक्षा अपने-आप बहुसांस्कृतिक बन जाती है।

Language Teaching in Multilingual and Multicultural Classrooms

(बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक कक्षा में भाषा शिक्षण)-

Use of Mother Tongue(मातृभाषा का प्रयोग) -

Teachers should use students' mother tongue as a support language.

शिक्षकों को विद्यार्थियों की मातृभाषा को सहायक भाषा के रूप में प्रयोग करना चाहिए।

Example:

Explaining grammar rules in English and giving examples in Hindi.

a) Multilingual Teaching Strategies

(बहुभाषी शिक्षण रणनीतियाँ) -

Translation method

Storytelling in different languages

Group discussion in home language

Bilingual teaching aids

अनुवाद विधि

विभिन्न भाषाओं में कहानी सुनाना

मातृभाषा में समूह चर्चा

द्विभाषी शिक्षण सामग्री

b) Inclusive Language Teaching

(समावेशी भाषा शिक्षण) -

Teachers should ensure that no language or culture is neglected.

शिक्षकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी भाषा या संस्कृति की उपेक्षा न हो।

Example:

Encouraging students to write short paragraphs in their home language first, then in English.

Role of Teacher (शिक्षक की भूमिका) -

Act as a cultural mediator

Respect all languages

Encourage participation

Create a safe environment

सांस्कृतिक सेतु की भूमिका निभाना

सभी भाषाओं का सम्मान

सहभागिता को प्रोत्साहन

सुरक्षित वातावरण बनाना

Challenges in Multilingual & Multicultural Classrooms (चुनौतियाँ)-

Language barrier

Miscommunication

Cultural misunderstanding nahi

Lack of teaching resources

भाषाई बाधाएँ

गलत संप्रेषण

सांस्कृतिक गलतफहमियाँ

शिक्षण संसाधनों की कमी

Solutions (समाधान) -

Teacher training

Use of ICT and visual aids

Flexible teaching methods

Cooperative learning

शिक्षक प्रशिक्षण

ICT व दृश्य सामग्री का प्रयोग

लचीली शिक्षण विधियाँ

सहकारी अधिगम

(निष्कर्ष) -

Multilingual classrooms with multicultural awareness make language teaching effective, inclusive and meaningful.

बहुभाषी कक्षाएँ और बहुसांस्कृतिक जागरूकता भाषा शिक्षण को प्रभावी, समावेशी और अर्थपूर्ण बनाती हैं।